



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीन कु १०१२७	११. ०२. २५	५	१-५

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाएं



जागरण - संबाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्रे विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज प्रशिक्षणार्थियों एवं अधिकारियों के साथ • जागरण

हक्की के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज प्रशिक्षणार्थियों एवं अधिकारियों के साथ • जागरण के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सहुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फल्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की

मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को खिसकता जा रहा है।

भूजल की कमी चिंता का विषय : क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहां लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर २२	११.०२.२५	३	३-५

एचएयूः जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे पर कार्यक्रम
जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप
में अपनाने का समय : प्रो. बीआर काम्बोज



हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि कॉलेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यालिथ रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड, चंडीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यालिथ प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरतर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो अनेक बाले समय में सिंचाई तो दूर पीने के स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभूत उताला	11.02.25	३	१-३

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का आया समय : प्रो. कांबोज एचएयू में जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारंभ

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज मुख्यातिथि रहे।

मुख्यातिथि प्रो. कांबोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरंतर गिरना जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फल्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया।



एचएयू में प्रशिक्षणार्थियों व अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। योग्यता: संवाद

क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहां लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ.

अतुल ढींगड़ा, संपदा अधिकारी एवं मुख्य अधियंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, केंद्रीय भूजल बोर्ड, चंडीगढ़ से डॉ. राकेश राणा, डॉ. साकिब आजमी, डॉ. आयुष केशरबानी डॉ. अमनदीप कौर व डॉ. गार्गी वालिया उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उजीत समाचार	11.02.25	5	1-3

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के स्वरूप में अपनाने का समय : प्रो. काम्बोज



कलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षणार्थियों व अधिकारियों के साथ।

हिसार, 10 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा):
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड,
(सीजीडब्ल्यू) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र,
चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन
भागीदारी द्वारा जलभूत प्रबंधन एवं
स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन
है। इसलिए कृषि के लिए जल की
उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में
उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक
संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो
आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की
बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल
की भारी कमी हो सकती है। उन्हें बूंद-
बूंद पानी का

**हक्किय में जलभूत प्रबंधन व स्थानीय भूजल
मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारम्भ**

दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केंद्रीय भूजल बोर्ड, (सीडीडब्ल्यूबी) चण्डीगढ़ के क्षेत्रीय नियंत्रणक विद्या नंद सेरी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उहोंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया। लेकिन आज जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय दायित्व के महाविद्यालय ने पहुंचा ने कार्यक्रम किया। इस उत्तराधिकारी अनुल लींगांड़ा मुख्य अधिकारी मीडिया एडव केंद्रीय भूजल राकेश राणा, आयुष केशराज डॉ. गार्गी वर्मा

रूप में अपनाने का समय आ गया है। क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहाँ लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निकर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है, जो कृषि (42 प्रतिशत), घरेलू (36 प्रतिशत) और औद्योगिक (27 प्रतिशत) आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण और इसके प्रभावी प्रबंधन के लिए में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है।

प्रतिभावी भूजल मूल्यांकन, निगरानी और पुनर्भरण के लिए आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, साथ ही टोपोसीट का उपयोग करके भूभौतिकीय सर्वेक्षण और जल विज्ञान संबंधी मूल्यांकन में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। प्रशिक्षण प्रतिभागियों को प्रभावी भूजल प्रबंधन के लिए जीआईएस और रिमोट सेंसिंग के उपयोग से भी परिचित कराएगा। कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढांगड़ा, सम्पदा अधिकारी एवं मुख्य अधियिंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, केन्द्रीय भूजल बोर्ड, चण्डीगढ़ से डॉ. राकेश राणा, डॉ. साकिब आजमी, डॉ. आयुष केशरवानी डॉ. अमनदीप कौर व डॉ. गार्ग वालिया उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
प्रजाबंधन सरकारी	11. 02. 25	२	५-६

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय : प्रो. काम्बोज



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षणार्थीयों एवं अधिकारियों के साथ

हिसार, 10 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्रे' विषय पर तीन दिवारीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड चंडीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ट अतिथि के रूप में

उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर नियन्त्रण गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूद-बूद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने

कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ी खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को घिसकता जा रहा है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया। लेकिन आज जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय आ गया है।

क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहाँ लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है, जो कृषि (42 प्रतिशत), घरेलू (36 प्रतिशत) और औद्योगिक (27 प्रतिशत) आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण और इसके प्रभावी प्रबंधन के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। प्रतिभागी भूजल मूल्यांकन, निगरानी और पुनर्भरण के लिए आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	11.02.25		

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय- प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सौजीडब्ल्यूबी)चण्डीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फल्वारा सिंचाई को अपनाने



के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया

हकृति में तीन दिवसीय
जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय
भूजल मुद्दे' विषय पर
कार्यक्रम का शुभारंभ

जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को खिसकता जा रहा है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	10.02.25		

जल का उचित प्रबंधन और संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय : काम्बोज

हकूमी में तीन दिवसीय जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारंभ

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। जौधी
चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय
भूजल
बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूडी) द्वारा
परिवहनी बोर्ड, चापडीगढ़ के सम्पुत्त
तत्त्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा
जलभूत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल
मुद्रा' विषय पर तीन विशेषज्ञ द्वितीय
संस्कृत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोगभे
हआ। कृषि गतिविधालय के सभागार
में आयोजित इस कार्यक्रम में
विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ.
यी.आर. कामोज मुख्यतात्त्वित रहे।
केन्द्रीय भूजल बोर्ड,
(सीजीडब्ल्यूडी) चापडीगढ़ के सेवीय
निदेशक विद्वा नंद नेही विशिष्ट
अधिकारी के समै में उपस्थित रहे।

मुख्यतात्त्विक प्रो. काल्पनेंद्र ने कहा कि भूजल के अति दीर्घन के कल्पणा जल स्तर नियन्त्रण दिशा जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभासकर आ रहा है। यदि प्राकृतिक



फलपति थे वी.आर.काल्पनेज परिवारियों एवं अधिकारियों के साथ

संसाधनों का दौहन इसी तरह जारी रहा हो और अनेक वाली समय में सिंचाई तो दूर की बात, लेणों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भाँति कमी हो सकती है। उन्होंने कूद-बूद पानी का सुखोपायग करने के साथ जल उत्पायग दस्तावे के लिए टपका सिंचाई व फलवाला सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कहीं में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खाल करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबन्धन व संरक्षण करके ही अनेक वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है।

जल की लगातार व्यापी खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को बिस्फूटा जा रहा है। पारपारिक जल संरक्षण के अव्यावहारिक तथाओं को हमने अधिकांशतः के दबाव में त्याग दिया। लेकिन आज जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय आ गया है।

क्षेत्रीय निर्देशक विधा नद नेपी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिविल इंजीनियरों में, जहाँ लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण विषय का विषय है। वैशिक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कूल निष्कर्षी का 33 प्रतिशत है, जो कृषि (42 प्रतिशत), घोटल (36 प्रतिशत) और औद्योगिक (27 प्रतिशत) अवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रतिशत का उत्तरण स्थानीय सरकार पर जल संरक्षण और इसके प्रभावी प्रबोधन के बारे में लोकों में जागरूकता

बढ़ाना है। प्रतिभागी भूजल मूल्यांकन, निरापदी और पुनर्वर्णन के लिए अधिकारिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, साथ ही टोपिंस्टीट का उपयोग करके भूभौतिकीय संरचनाओं और जल विज्ञान संबंधी मूल्यांकन में व्यवहारिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। प्रशिक्षण प्रतिभागीयों को प्रधानी भूजल प्रबन्धन के लिए जीवाश्रयम् और रियोट सेंसिंग के उपयोग से भी परिचित कराया।

कृष्ण महाविद्यालय के अधिकारी थे। एसके पास जा ने काशीक्रम में सभी का स्वामत किया। इस अवसर पर ओमरामी डॉ. अनुल कौरा, सम्पाद अधिकारी एवं मुख्य अधिकारी थे। एगाम सिद्धपुरिया, भौद्धिया एवं ब्रह्मजर थे। सदौप 35वीं कांगड़ीय भूजल थोर, बन्धुवीर से डॉ. लकेश राणा, डॉ. साकिन आजमी, डॉ. अनुषु केशवरामी थे। अमननीप कौर व डॉ. गामी अलिया उपस्थित थे।